ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 5, Issue 8, Aug 2015 Impact Factor 4.418 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

''संजीव–मजदूर एवं समाज व्यवस्था के साक्षी, साथी एवं प्रेरणा स्रोत''

डा0 पूनम देवी (व्याख्याता हिन्दी)
विभागाध्यक्ष,
बाबा खेतानाथ स्नात्तकोतर महिला महाविद्यालय
भीटेड़ा(बहरोड़), अलवर (राजस्थान)

कथाकार संजीव ने अपने रचना–संसार में शोध का संधान करते हुए आदिवासी क्षेत्रों, अंचलों, ग्रामीण–जीवन, कल कारखानों एवं कोयलांचलों में काम करने वाला मजदूर वर्ग, औधेगिकीकरण, राष्ट्रीयकरण एवं निजीकरण में मेहनतकश श्रमिक वर्ग, अपेक्षित एवं शोषित वर्ग, पूंजीपति एवं जमींदारी सभ्यता, जनजातीय अभिशप्त जीवन आदि विषयों में बंगाल तथा बिहार के विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों, आंचलिक एवं आदिवासी क्षेत्रों को अपनी रचनाओं के कथानक का आधार बनाकर समाज एवं समाज की व्यवस्थाओं से परिचित करवाया। क्योंकि संजीव की विचार सृष्टि में 'समाज' है, 'व्यक्ति' है, 'सभ्यता' ह, 'संस्कृति' है। वैचारिक–तत्व की दृष्टि से संजीव का कथा–साहित्य के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। संजीव के कथा लेखन में मैने हमेशा प्रगतिशील व लोकचेतना को पाया। श्रमिक एवं दलित वर्ग के ये सदैव पक्षधर रहे।

कोयला उद्योग तथा अपने आस–पास के आदिवासी जीवन को संजीव ने अपनी रचनाओं की प्रमाणिक विषयवस्तु बनाने के लिए सदैव अथक परिश्रम किया है। अपनी कथाओं को यथार्थ व सत्यरूप देने के लिए कथाकार संजीव जी ने जो कष्टत्रद यात्राएँ दुर्गम क्षेत्रों को अपनाकर की है, उसका एक अं''ा भी हमारी पीढ़ी को मंजूर नहो। जबकि संजीव जी तथ्यपरक सामग्री जुटाने के लिए इस तरह के श्रम के आदी बन चुके है। उनकी कोई भी रचना ऐसी नही है। जिसने शोध के ि''खर को न छुआ हो। प्रत्येक रचना का हर एक पात्र समाज व्यवस्था के किसी न किसी रूप को स्पष्ट करता हुआ, उससे संर्घष करता हुआ दिखाई देता है और कथाकार संजीव की रचनाओं के पात्र नहीं स्वयं संजीव भी इस प्रकार के जीवन से ताउम्र जूझते रहे हैं।

संजीव ने अपनी कथा–यात्रा के द्वारा हिन्दी कथा साहित्य को न केवल विभिन्न कोणों से पकड़ने के लिए नए–नए कथा क्षेत्रों की भी तला''ा की है। कहानी गाँव की हो या चाहे शहर की, मैदानी इलाकों की कहानिया हो या चाहे पहाड़ो की सामान्त–सेठों की

कहानिया हो या चाहे मजदूरों की कथाकार संजीव ने बड़ी गहराई के साथ इस गति''ील यथार्थ को पकड़ने का एक रचनात्मक उपक्रम करते आए है।

संजीव की समग्र कहानियों और उपन्यासा में एक तिहाई कहानियाँ तो ऐसी हैं जिनको लिखने का साहस सिर्फ कथाकार संजीव में ही है जैस–मसलन, अपराध, 'ऑपरे''ान जोनाकी,' 'प्रेरणास्रोत', 'प्रेतमुक्ति', 'सागर सीमान्त', 'ब्लैकहोल', 'आरोहण' आदि जिन कथाओं में प्रगति''ील परम्परा, अपने विषय के साथ रचनाकार के द्वन्द्वात्मक रि''ते तथा एक अदम्य और जीवन जिजीविषा का प्रतीक जिसको देखकर लगता है कि संजीव भी हिन्दी कथा साहित्य के ऐसे ही अदभुत आरोही है।

''तिरथेनी का तड़बन्ना'' कहानी में जिन प्रगति''ील शक्तियों के कारण गाँवों में जो वर्ग संघर्ष के रूप में समस्याएँ उभरती दिखाई गई है तो ''पूत–पूत! पूत–पूत!'' कहानी में उन्ही शक्तियों को वर्ण संघर्ष कराने वाली शक्तियों से टकराना पड़ता है और उन दोनो रचनाओं के रचनाकाल में लगभग दस (10) वर्षो का अंतराल है। वर्ग संघर्ष से उत्पन्न समाज में जातीय प्रतिहिंसा ने इतना उग्र रूप धारण कर लिया कि संजीव जैसे प्रतिबद्ध कथा कार को यह कहानी ''पूत–पूत! पूत–पूत!'' लिखकर आक्रो''ा दिखाना ही पड़ा। कथाकार संजीव ने अपनी लेखन शक्ति से उन क्षेत्रों को छुआ जो हिन्दी साहित्य में अछूता था। इसलिए संजीव जी को असीमित रेंज का ऊर्जावान लेखक कहना तर्कसंगत होगा।

कथाकार संजीव ने अपनी रचनाओं में कोयला–खदानों के मजदूर, सर्कस, समुद्र, जनजाति और विज्ञान जैसे अनछुए और वर्जित विषयों को ही आघात के लिए चुना है। अपनी रचनाओं को एक गौरव''ाली परम्परा से जोड़ते हुए उसे पल्लावित–पुहिपत करते हुए, उसे एक नया रूप देते कथाकार संजीव अपने कर्तव्य के निर्वाह के प्रति प्रत्येक रचना में सजग दिखाई देते है।

कथाकार संजीव के शब्दों में, ''मैं इस महाजागतिक ब्रह्माण्ड का एक व्याकुल केन्द्र हूँ। लेखन ने मुझे कुछ दिया हो या नहीं, मगर मनोजगत की अर्गलाएँ, खिड़कियाँ खोलते, बन्द करते, दीवारों के पुख्तेपन सीलन या भुरभुरेपन को महसूसते, आदिमगंध की खोहों से सितारों के आगे एक स्मृति और कल्पना की आंखमिचोनी में भटक कर सत्य को टटोलना मेरे लिए एक दिलचस्प अनुभव रहा है। इसलिए मेरी हर एक रचना मेरे लिए

शोध की प्रक्रिया से गुजरना है।''[1]

''सावधान! नीचे आग है'' उपन्यास में कोयला खदानों में काम करने वालेमजदूरों के जीवन की व्याख्या कथाकार संजीव ने की है तो अपने 'सूत्रधार' उपन्यास में बिदेसिया के प्रसिद्ध लोक कलाकार जाति से नाई भिखारी ठाकुर के जीवन की संर्घष गाथा को प्रस्तुत किया है तो 'धार',
'पाँव तले की दूब' और 'जंगल जहाँ शुरू होता है, जैसे उपन्यासों में आदिवासियों के बीच उनके अधिकार की लड़ाई लड़ने के बहाने व्यवस्था परिर्वतन की लड़ाई लड़ने की कथा को सम्बल बनाकर चित्रित किया है।

वर्ग संघर्ष के बने बनाय ढांचे को लेकर कहानी लिखने के स्थान पर वस्तुस्थिति का निर्मम आकलन कथाकार संजीव ने अपनी रचनाओं में किया है।श्रमिक वर्ग पर पूंजीपतियों के उत्पीड़न में न अटक कर संजीव ने मजदूर यूनियन के नेताओं के चेहरों को बेनकाब किया है, कुल मिलाकर संजीव का कथा साहित्य वर्तमान यथार्थ के केई पक्षों को उधेड़ती है।

कथाकार संजीव के कथा–साहित्य में पारद''र्ी त्वचा के नीचे धड़कता जीवन अपनी व्याप्ति में सतह से उठे और सतह पर पड़े दोनों तरह के लोगों के चरित्रों को समेटा है उनके पास जीवन और समाज के गहन अनुभव है। एक सजग दृष्टि है। तभी तो पूंजीवादी सामन्ती और नितान्त व्यक्तिगत लाभ के द''र्न पर चल रही व्यवस्था के
प्रति आक्रो''ा उनकी हर कथा में फूटता है। 'धनुषटंकार,' 'भूखे रीछ', 'लांग साइट', चुनौती,' नेता' 'मकतल', 'कन्फे''ान' आदि कहानियों में मजदूरों का जीवन एवम उनकी समस्याओं को चित्रण मिलता है। जिस प्रकार ग्रामवासियों की स्थिति दयनीय है, उसी प्रकार शहरों में मजदूरों की स्थिति संघर्षमय व कष्टमय है। जिनके शोषण के अनेको रूप कथा कार संजीव की कथाओं में चित्रित होते है।

नोटः– 'परस्पर पत्रिका जुलाई 2006' केन्द्र में संजीव' पृ.... 41